International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(II), October - December, 2021, pp.130-134

कोविड–19 में पर्यावरण

कैलाश चन्द्र मीना*

सार

सहारनपुर से नजर आई दिखाई गई बर्फीली चोटियाँ *– लॉकडाउन में लोगों को भले ही दिक्कते हुई लेकिन प्रकृति अनलॉक हुई। आबो–हवा को मानो बूस्टर डोज मिल गई। नदियों और वायु में प्रदूषण कम हो गया। वन्यजीवों को स्वच्छंद विचरण और प्रवासी पक्षियों का कलख दिखा। लॉकडाउन से पर्यावरण में सुधार का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से हिमालय की चोटियां नजर आई। हिमालय सहारनपुर से करीब 300 कि.मी दूर है। बिहार के सीतामढ़ी जिले से माउंट एवरेस्ट नजर आया।*

शब्दकोशः *लॉकडाउन, पर्यावरण, वन्य जीव, बूस्टर डोज, अनलॉक।*

प्रस्तावना

राजस्थान

बंगालों में अवैध कटाई पर अंकुश– . लॉकडाउन से शहरों की हवा साफ हुई। अप्रेल–मई में वायु गुणवत्ता सूचकांक 100 से कम रहा। फरवरी–मार्च के अंत तक देश लौटने वाले प्रवासी पक्षियों का झूण्ड इस साल भी मई के अंत तक देखा गया। जंगलों में आमजनी, अवैध कटाई व शिकार की घटनाऐं घटी। सीएम कोविड सलाहकार समिति के सहजन्य डॉ. वीरेन्द्र सिंह के अनुसार प्रदूषण में कमी से श्वास के मरीजों को फायदा मिला है।

छत्तीसगढ़ श्वास सम्बंधी रोग घटे– रामपुर, विलासपुर, दुर्ग–भिलाई, रामगढ़, कोरवा में प्रदूषण का स्तर लॉकडाउन के बाद काफी घटा। श्वास संबंधी रोगों में कमी आई। चिड़ियाँ और कौवे ज्यादा नजर आए।

मध्यप्रदेश

बदल गया बाघों का व्यवहार– लॉकडाउन से वायु और जल प्रदूषण के अलावा जंगलों में भी सुधार देखने को मिला। भोपाल का एयर क्वालिटि इंडेक्स औसतन 180 था, जो दो माह से गिरकर औसतन 100 के करीब पहुंच गया। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के जानवरों के व्यवहार में बदलाव आया है पहले जो बाघ पर्यटकों को देखकर विचलित नहीं होते थे, अब गर्श्त देखकर जंगलों में भाग जाते है। बंदर भी पहले शांत रहते थे वे भी अब आक्रमक हो गये है।

उत्तर प्रदेश

गंगा की लहरों में नजर आई डॉल्फिन– गंगा, यमुना व गोमती में प्रदूषण कम हो हुआ। गतवर्ष मेरठ के पास गंगा में डॉल्फिन नजर आई थी। केन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड ने भी माना कि यूपी में गंगा का पानी पूरी तरह स्वच्छ है। सीपीसीबी के मुताबिक पानी में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ गई। नाइट्रेट कम हुआ।

---

6 सहायक आचार्य, व्यावसायिक प्रशासन, स्व. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदीकुई, दौसा, राजस्थान।

गुजरात जंग लमें मंगल– लॉकडाउन के बाद चिड़ियाघरों में लोगों कल आवाजाही कम होने से पशु–पक्षी शांत देखे जा रहे है। अहमदाबाद के कांकरिया जू के निदेशक आर. के शाहू के अनुसार मनुष्यों को देखकर वे इधर–उधर नहीं भागते। अहमदाबाद का वायु गुणवत्ता सूचकांक 21 मार्च 2021 को 314 (संतोष जनक) स्तर पर आ गया। पश्चिम बंगाल प्रवासी पक्षियों की परवाज– इस बार राज्यय में प्रवासी पक्षियों का आगमन अधिक रहा। राज्य के प्रमुख जलाश्यों में 65 प्रजाति के पक्षी देखे गए। लॉकडाउन में एकांत मिलने से राज्य के चिड़िया घरों में पशु–पक्षि स्वाभाविक विचरण करते नजर आ रहे है।

तमिलनाडु यूरोप जैसी शुद्ध हवा– चैन्नई में लॉकडाउन के दौरान प्रदूषण कम हुआ। पशु–पक्षी अधिक स्वच्छ विचरण कर रहे है। एक अध्ययन के अनुसार यहां वायु की शुद्धता यूरोप के देशों की तरह हुई है। पक्षियों के अभयारण्यों में ठहरावों की अवधि बढ़ी है। मोरों की संख्या में वृद्धि देखी हुई समुद्री जीव–जंतुओं की संख्या बढ़ी।ूंज नच यह वाइरल एक मेसेज में महिला को उसके पति द्वारा घर में तथा उसके आसपास अधिक पेड़– लगाने के लिए मना किया जाता था। अभी एक दिन अचरज के लॉकडॉउन में उनकी तबीयत खराब हो जाती है। डॉक्टरों द्वारा जॉच में फेफड़ो में इनफेक्शन होना बताया लेकिन ऑक्सीजन स्तर सही होने से जल्दी स्वस्थ हो जायेगें ऐसा कहां गया । और कहां यह सब आप के आसपास शुद्ध वातावरण एवं वृक्षों से निरंतर शुद्ध ऑक्सीजन मिलने के कारण सभंव हो सकता है। तब महिलाओं ने अपने पति से कहां देखों आप मुझे पेड़ पौधे कम लगाने के लिए कहते आज पेड़– पौधों कम लगाने के लिए कहते आज इन्ही पेड़– पौधों द्वारा शुद्व ऑक्सीजन प्रदान करने से आप जल्दी स्वस्थ हो जायेगा।

विश्व पर्यावरण दिवस

ये हमें बचाते है मगर इन्हें बचाने पर हमारा ध्यान नहीं

प्रकृति ने हर चीज चुन– चुनकर सन्तुलन के साथ दी है लेकिन मनुष्य की लालसा और मंशा के कारण यह सन्तुलन गड़बड़ रहा हैं । जीव हो या जड़ी, प्रकृति प्रदत लाभकारी व महत्त्वपूर्ण चीजों मे कमी आई है। वन्यजीव, उपयोगी लकड़ी , औषधीय उपयोग की चीजें खात्में के कगार पर है। इसका बड़ा नुकसान सामने आ रहा है, जो भविष्य मे गहरा जाएगा लेकिन इन्हें बचने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

ऊँट

महत्व : यह रेगिस्तान इलाकों में परिवहन का साधन है। रेतीली इलाकों में परिवहन का साधन है। रेतीली मिट्टी मे उपयोगी साबित होने से रेगिस्तानी बार्डर इलाकों में में इलाकों में सेना के लिए चौकसी के लिए इस्तेमाल होता है। ऊँट दूध भी औषधीय गुण से भरपूर माना गया है।

थार में परिवहन का साधन

- **विलुप्ति का कारण**

राज्य पशु धोषित होने से दूसरे राज्यों में परिवहन पर रोक। कृषि कार्य में उपयोगिता कम होता । ऊँटनी के दूघ को बढावा देने का प्लेन फार्म नहीं मिला। ऊँट का पालन महॅगा है। बदले में आमदनी कम है। योजनाऐं भी कारगर साबित नहीं हो रहीं है। इस क्षेत्र में सरकारी क्षेत्र पर प्रयास किये जाने चाहिए।

- **खरमोर कीट नियंत्रण का कार्य**

महत्वः खरीफ फसलों व चारागाहों को कीट से होने वाले नुकसान से बचाता है। ईको टूरिजम में भी मददगार है। लोग इसे देखने के आते हैं।

विलुप्ति के कारणः

शिकार होना, आवास होना, परम्परागत चारागाह का न होना, इनकी संख्या काफी कम है। यह अजमेर व भीलवाडा जिले में दिखाई देता है। वर्तमान में यह प्रतापगढ़ जिले में दिखाई दे रहा है। गुजरात व मध्यप्रदेश में इसकी उपस्थिति अधिक है। वन विभाग ने इसकी संख्या बढाने पर खास काम नहीं किया है।

गोडावनः— टिड्डी का दुश्मन

महत्त्वः— यह डेजर्ट या ग्रास लैण्ड़ का पक्षी है। पश्चिमी राजस्थान में पाया जाता है। पाकिस्तान से आने वाली टिड्डी दल का सफाया करता है जिससे टिड्डी का बड़ा समूह नही बन पाता है, टिड्डी के अन्डे भी नष्ट करता है। यह कृषि व किसानो के लिए उपयोगी होता है।

विलुप्ति के कारणः घास के बड़े मैदानों का न होना। मैदानों मे झाडियाँ व बबूल ज्यादा हो गये। कई बार से पकिस्तान चले जाते है जहाँ इनका शिकार ज्यादा होता है। कुत्ते, लोमडी अन्डो व बच्चो को खा जाते है।

तीव्र गति से बढते शहरीकरण का प्रभावः

आज आधुनिक युग में तीव्र गति से बढते शहरी करण के कारण चारों तरफ मकान ही मकान दिखाई देते है। नगरी करण विस्तार के लिए अन्धाधुन्ध पेड़ों की कटाई की जा रही है। पहाड खात्में के कगार पर दिख रहे है। कंकरीट का जंगल विस्तार पर है। जबकि प्राकृतिक धरोहर नष्ट होती जा रही है। प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने के लिए जरूरी है कि पेड़, पहाड़ और वनों को बचाया जाये। प्रकृति का दोहन रोका जाये और अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाये।

जीव हो या जडी, प्रकृति प्रदत्त चीजों के अस्तित्व पर खतरा

बाघ जंगल का प्राकृतिक रक्षक

महत्त्वः— जंगल को नुकसान से बचाता है। जहां प्रवास करता है, वहां मनुष्य की आवाजाही कम रहती है। जंगल में शाकाहारी वन्य जीवों की संख्या को नियंत्रित करता है। यह इकों ट्यूरिज्म में काफी उपयोगी साबित हुआ है व आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा है।

विलुप्ति का कारणः— जंगलो का विनाश, तस्करी का होना शिकार इत्यादि। इसके प्रवास के इलाको के समीप किसानो—लोगों का नकारात्मक रवैया, असुरक्षित कुएँ—बावडी जिनमें वन्य जीव दुर्घटनाग्रस्त हो जाते है। इनकी विलुप्ति का मुख्य कारण जंगलो का खेडी करण माना गया है।

बीजा दवा के रूप में उपयोग

महत्त्वः— बीजा की लकड़ी लाल रंग की होती है। इसे मधुमेह रोग में काफी उपयोगी माना जाता है। साथ ही यह फर्नीचर निर्माण में भी उपयोग की जाती है।

विलुप्ती के कारणः— आयुर्वेद तथा फर्नीचर के रूप में प्रयोग से कटाई अधिक हुई, हालांकि प्राकृतिक रूप से यह पहले ही कम उपलब्ध थी। अधिक उपयोगिता के कारण यह और विलुप्त हो गयी।

काली शीशमः वर्षों तक रहता सुरक्षित

महत्त्वः— काली शीशम का फर्नीचर बहुत सुन्दर बनता है और उच्च गुणवत्ता युक्त होता है। उसमें कीट या फंगस नहीं लगते। महंगा बिकता है।

विलुप्ति के कारणः— काली शीशम ज्यादातर डूँगरपुर, बाँसवाडा, माउंटआबू, प्रतापगढ़ आदि इलाकों में दक्षिण अरावली पर्वतमाला के जंगलों में पाई जाती है। फर्नीचर के कारण इसकी कटाई अत्यधिक होती है। वन विभाग इसे बचाने के खास प्रयास नहीं कर रहा।

कोरोना महामारी ने समझाया हमें पर्यावरण का महत्त्व

स्वच्छ पर्यावरण प्रत्येक प्राणी के जीवन के लिए आवश्यक है। यह बात सदियों से हमारे पूर्वज मानते और अपनाते रहे है। परन्तु समय के साथ विकास की महत्त्वकांक्षा में मानवजाति ने पर्यावरण को बहुत हानि पहुँचाई। जिसका आभास हमें कोरोना महामारी के दौरान हुआ है। हमें स्वच्छ पर्यावरण को पुनः स्थापित करना होगा। कोरोना से जंग हम तभी जीत पाएंगे जब हम स्वच्छ पर्यावरण में प्रकृति के संग रहेंगे। पेड़—पौधे प्राण

वायु ऑक्सीजन के विपुल भण्डार है। यह प्रत्येक जीव, प्राणी के जीवन का आधार है। हम सभी को आज आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण पर जोर देना होगा। जिससे प्राकृतिक संतुलन स्थापित किया जा सके।

विशेषज्ञों ने कहा कोरोना काल में पीपल, बरगद और नीम की मांग बढ़ी

कोरोना काल में पीपल, बरगद और नीम को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ी है विशेषज्ञों का कहना है कि कोरोना वायरस महामारी संकट में ऑक्सीजन का महत्त्व बढ़ा है। इसलिए ज्यादा ऑक्सीजन वाले पेड़ों की मांग बढ़ी है। पीपल, बरगद और नीम में ऑक्सीजन उत्सर्जन की क्षमता भी अधिक होती है।

दूसरी और, घरेलू पौधों में तुलसी और गिलोय का प्रचलन बढ़ा है। दोनो में ही रोग प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा होती है।

फिल्मों ने समझाया पर्यावरण संरक्षण व स्वच्छता का महत्त्व

बॉलीवुड में पर्यावरण से छेडछाड़ के दुष्परिणाम विषय पर समय–समय पर अनेक फिल्मों का निर्माण किया जाता रहा है। इन फिल्मों से दर्शकों को निर्माता पर्यावरण के महत्त्व को समझाते है और उनके खतरों से सचेत भी करते रहते है। जैसे कम बारिश, प्राकृतिक आपदा, बाढ़, भूकम्प, सूखा इत्यादि आपदाऐं प्रकृति से छेड़छाड करने से प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न होने से आती है। जिनके बारे में निर्माता बॉलीवुड व हॉलीवुड फिल्मों के माध्यम से दर्शकों को देना चाहते है और प्रकृति में संतुलन बनाये रखने की सीख देते है।

प्रकृति हमें प्राण वायु देती, आप पेड़ लगाकर उसे रिर्टन गिफ्ट दें

पिछले दिनों पैदा हुई ऑक्सीजन किल्लत पर्यावरणीय चिंताओं की ओर इशारा भी है। पर्यावरणीय हमारे जीवन का अधार है, प्राणवायु से लेकर जैव विविधता और अन्य जरूरी संसाधन हमें यही से मिलते है। विशेषज्ञों का मानना है कि ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाए जाए तो ऑक्सीजन की कमी नहीं होगी।

ऑक्सीजन प्लांट में भी इसका उत्पादन तभी संभव है, जब पर्यावरणस में इसकी प्रचुरता होगी, हवा में 21 फीसदी ऑक्सीजन, 78 फीसी नाइट्रोजन तथा एक फीसदी अन्य गैसें होती है। प्रकृति ने हमें शुद्ध पर्यावरण दिया है, तो हमें भी पेड़ लगाकर उसे रिटर्न गिफ्ट देना चाहिए।

विभिन्न वनस्पति प्रोफसर के अनुसार पीपल, बरगद, नीम, अशोक, जामुन आदि के पौधे ज्यादा से ज्यादा लगाने चाहिए। ये अन्य पौधों की तुलना में ज्यादा ऑक्सीजन छोड़ते है।

- 70–80% ऑक्सीजन समुद्री पौधे देते है।
- 22 घण्टे ऑक्सीजन पीपल का पेड़ देता है।
- 20 घण्टे ऑक्सीजन नीम, बरगद, तुलसी के पौधे देते है साथ ही पर्यावरण को शुद्ध रखते है।

आकड़ो से जाने सच

- 80 फीसदी जैव विविधता उष्ण कटिबंधीय वनों में पाई जाती है
- 63 लाख वर्ग मील क्षेत्र को कवर करते थे उष्ण कटिबंधीय वन 1947 तक
- 32 लाख वर्ग मील क्षेत्र ही बच गया इन वनो का अब
- 137 पौधे व जीवों की प्रजाति लुप्त हो रही है हर दिन पेड़ों की कटाई से
- 10 लाख समुद्री जीव मारे जाते है, हर वर्ष, प्लास्टिक कचरे से
- अर्जुन और अशोक का पेड़ दूषित गैसों को सोखकर ऑक्सीजन उत्सर्जित करते है। स्त्रोत संयुक्त राष्ट्र और नेशनलज्योग्राफी।

अब समझ आया प्रकृति के जर्रे–जर्रे में भरी 'प्राणवायु' का मोल

कोरोना महामारी की पहली लहर में लोगों ने घरों में औषधीय पौधे लगाने शुरू किए तो अब नर्सरी में ऑक्सीजन देने वाले पौधे ढूंढ रहे है। क्योंकि दूसरी लहर में जब ऑक्सीजन की कमी से लोगों की सांसों को

चलाने के लिए प्राणवायरु के रूप में ऑक्सीजन देने वाले पेड़–पौधों। वर्षों से नैसर्गिक ऑक्सीजन का स्त्रोत रहे है बालकनी और खुली जगह में ऑक्सीजन बना रहे है। पर्यावरण विशेषज्ञों के मुताबिक महजा 18 मामलों में खास किस्म के पौधे लगाकर 1800 वर्ग फीट के घर की हवा को तरोताजा रखा जा सकता है। नासा के वैज्ञानिक डॉ. बीसी वॉलवार्टन ने हाल ही अपनी रिपोर्ट में घरों में पोधों की जरूरत बताई है।

ये ऑक्सीजन के स्त्रोत

एक पत्ती एक घण्टे में 5 एम एल ऑक्सीजन पैदा करती है। इसलिए अधिक पत्तियों वाले पौधे, जैसे पीपल, बांस, नीम, बरगद, तुलसी, पीसलिली ऐलावेरा स्नेक प्लांट आर्किड, क्रिसमसट्री, एरेकापाम, चन्दन, गुलमोहर, आदि ऑक्सीजन के अच्छे स्त्रोत है।

हर 500 मीटर पर हो पीपल का पेड़

सूरत में 10 हजार से अधिक नर्सरियाँ है। नर्सरी संचालक के मुताबिक दो महीनों में घर के भीतर लगाए जाने वाले पेड़ पौधों की बिक्री 40 फीसदी तक बढ़ गई है। अब औषधीय और ऑक्सीजन देने वाले पौधों की मांग ज्यादा हो गई।

पीपल ऑक्सीजन का अच्छा स्त्रोत होता है। पर्यावरण विदों के मुताबिक हर 500 मीटर में एक पीपल के पेड़ ऑक्सीजन बैंक के समान होगा। बिहार सरकार ने पिछले दिनों 'नेचर क्योर्स यू' अभियान चलाकर लोगों को ऐसे पौधे लगाने के लिए प्रेरित करना शुरू किया है।

लोगों को समझना होगा कि कुदरत ने हो हमें भरतपुर प्राणवायु दी है। फिर इसकी किल्लत क्यों? हमें प्रकृति के इस तोहफे की कीमत समझनी होगी। पौधे के जरिए हम सहज ही प्रकृति से जुड़ सकते है। इसमें अपनी भागीदारी बढ़ाए। स्नेहल पटेल, पर्यावरण विशेषज्ञ, सूरतं

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय अर्थव्यस्था प्र.दर्पण विशेषांक
2. आउटलुक जून 2021
3. इण्डिया टूडे जून 2021
4. राजस्थान की अर्थव्यवस्था नाथूराम का
5. राजस्थान का भूगोल भल्ला
6. दैनिक नवज्योति जून 2021

❖◆❖